44	ण्य करुः स्यादाषाणा मुखशाधनः।	
45	वक्रभेदी तु तिको एक काणामाना निकार महार अधाने भाइन्ड	79
46	॥ ६७६९ ॥ ५थ क्षायस्तुवरेग अवि कार्क किम्बर्गिक	28
47	र्सः ॥ १३६१ ॥ । अवह ॥ । अवह	es
48	गन्धा जनमनोव्हारी निका है जीएगा	30
49	स्वर्धात्वात्वान्त्रवाद्यां ताः गायेणनामाध्रमम् ॥ १३७३ ॥	31
50	समाकर्षी निर्कारी चर मिनाए स्थानः सुधानः समाक्षेत्र निर्माहे निर्माह	500
51	स म्रामोदो विद्वर्गः ॥ १३६० ॥ मन्त्री	88
52	विमर्दात्थः।परिमलोगः हणसणनाम्नामनानि गिर्धः	3.5
53	। प्रथामारी मुखवासनः का कार्क कार्क	35
54	इष्टगन्धः सुगन्धिश्च एक व्यक्ति काण एक अवक्त एष्ट्राने	
55	इर्गन्धः पूतिगन्धिकः ॥ १३६१ ॥ ठक । ७३	37
56	म्रानगन्धि तु विस्नं स्या-	
57	॥ ००६१ ॥ दर्णाः द्वेतादिका मुमी । । १६६ । । । । ।	es
58	श्वेतः श्वेतः श्रुत्तो कृशियो विशदः श्रुचिः ॥ १३६२ ॥ जन्	04
59	म्रवदातगार्ष्रभवलन्धवलार्जुनाः। विष्ठा मिना कुमता	14
60	पाएड्रः पाएड्रः पाएड्-मान्त	23
	1177177	-23

44. Scharf (3 W.). — 45. Bitter (2 W.). — 46. Zusammenziehend (2 W.). — 47. Geschmack. — 48. Der Geruch entzückt die Herzen der Menschen. — 49. 50. Ueberaus wohlriechend (4 W.). — 51. Ein sich weit verbreitender Wohlgeruch. — 52. Ein durch Reiben sich entwickelnder Wohlgeruch. — 53. 54. Wohlriechend (4 W.). — 55. Uebelriechend (2 W.). — 56. Nach rohem Fleisch riechend (2 W.). — 57. Die Farben, weiss u. s. w., sind folgende. — 58—60. Weiss (16 W.).